RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary 2021; 6(3):134-137
ISSN: 2455-3085 (Online)
https://doi.org/10.31305/rrijm.2021.v06.i03.019
Research Paper
Double Blind Peer Reviewed/Refereed Journal
https://www.rrjournals.com/

किराना एवं इन्दौर घराने में आश्रय राग कल्याण थाट की बन्दिशों का साहित्यिक एव सांगीतिक विश्लेषण

श्रेया भारद्वाज

पी.एच.डी शोधार्थी, संगीत विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय समरहिल शिमला (171005)

ABSTRACT

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में समृद्ध घरानागत परम्परा के अन्तगर्त किराना एवं इंदौर घरानारागों की बन्दिशों की परम्परागत शैली के सरक्षण व संवर्धन कर रहे हैं।।हिंन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में रागदारी संगीत मुख्यतः भातखण्डे जी द्वारा बताए गए दस थाटों में समाहित है जिसमे कल्याण एक महत्वपूर्ण,प्रचलित व सर्वप्रथम सिखाया जाने वाला आश्रय थाट है जिसका जन्य या आश्रय राग कल्याण है। इसे ईमन, एमन व यमन के नाम से जाना जाता है। प्रस्तुत शोध पत्र में किराना व इंदौर घराने की कल्याण की साहित्यिक व सांगीतिक तत्वों को उजागर किया गया है। जैसे इदौर घराने की उस्ताद अमीर खां जी की ''कजरा कैसे डारूं'', ''शाज़–ए–करम' ग, अवगुन न कीजे गुणी सन। किराना घराने की गंगूबाई हंगल की काहे बजाई कान्हा बांसुरी, मोरी गगरिया भरन दे। इन बंन्दिशों में साहित्य व संगीत का अनूठा संगम है।ये रचनाएं भावपूर्ण,सन्देशात्मक, आध्यत्मिकता से ओत प्रोत हैं, व राग यमन की धातु और मातु पक्ष को उजागर कर रही है।

Keywords: *आश्रय राग कल्याण, बन्दिश, संगीत एवं साहित्य, किराना घराना इंदौर घराना*

Article Publication

Published Online: 15-Mar-2021

***Author's Correspondence**

श्रेया भारद्वाज

पी.एच.डी शोधार्थी, संगीत विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय समरहिल शिमला (171005)

✉ shwetabhardwaj212[at]gmail.com

© 2021The Authors. Published by *Research Review Journals*

This is an open access article under the CC BY-NC-ND license (https://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/4.0/)

भूमिका–

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत या हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत विविधताओं से भरा हुआ है।यह विविधता संगीत के सौन्दर्य के भिन्न भिन्न सोपान हैं। जिसके निर्माण में एक विशाल और समृद्ध परम्परा,घरानागत परम्परा का मुख्य स्थान है। गायकी में घराने एक विशिष्ट शैली के ही परिचायक हैं जिनमें एक मुख्य गायक की आवाज़ के गुण धर्म भावगत विशेषताएं,कलागत विशेषताएं,साधना,रियाज़ आदि तत्व समाहित रहते हैं इन मुख्य तत्वों का अनुसरण कर श्ष्य वर्ग शैली कोमम आगे बढ़ाता है और ये परम्परा सीना–ब–सीना तालीम द्वारा संगीत का निर्वाह करती है।इस परम्परा का इतिहास ढाई सौ वर्ष पुराना है।''डॉ० वी. आर देवधर जी के अनुसार मेहनत,रियाज़ के द्वारा चमकीला,आकर्षक बनाने का प्रयत्न हर घराने के संस्थापक द्वारा किया जाता है कलाकार में वही उस घराने की विशिष्ट पहचान बन जाती है।'' गायकी की ऐसी ही विशिष्ट परम्पराएं और शैलिगत विशेश्ताओं की पहचान हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में किराना और इन्दौर घराना भी है जिसमे समय समय पर कईविद्वजन , संगीतकार ,वाग्येकार हुए हैं जिन्होने परम्परा की श्रृंखला में अपनी साधना और रियाज़ के द्वारा इतिहास में अपना नाम दर्ज कर इन घरानों के उत्थान मे योगदान दिया है।किराना एवं इन्दौर घराना हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत या उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत के बहुप्रचलित घराने हैं जो वर्तमान में भी अपने रागदारी संगीत की परम्परा का निर्वाह कर रहे हैं। किराना घराना इन्दौर की अपेक्षा अधिक प्राचीन है। इस घराने के संस्थापक उस्ताद अब्दुल करीम खान साहब द्वारा की गई है।

बन्दिश–

शास्त्रीय संगीत की तालीम में रागदारी संगीत में राग के तत्वों की विशेषताएं जैसे स्वर–संगतियां,आलापचारी,लयकारी,राग रस अलंकार,तान,खटके,मुर्की अन्य शास्त्रीय तत्व सम्मिलित होते हैं।इन सभी रागात्मक पहलुओं और घरानों ही परम्परा को सुरक्षित रखने के लिए एक महत्वपूर्ण तत्व,बन्दिशों की रचना हुई जिसके इर्द गिर्द राग रूपी महल को खड़ा किया गया जिनसे पीढ़ी दर पीढ़ी एक बन्दिश में राग का मूल स्वरूप सदैव सही रूप मे शस्त्रीय तत्वों सहित जीवित रहे। किराना घराने की प्रख्यात गायिका डॉ० प्रभा अत्रे के अनुसार ''बन्दिश राग का दर्पण होती है जिसमे राग की विशिष्ट विशेषताएं समाहित होती हैं परन्तु यह बात भी ध्यान रखने योग्य है कि राग की एक ही बन्दिश द्वारा यह सभी विशेषताएं पूर्णरूपेण संभव नहीं है। एक बन्दिश में किसी राग की कुछ ही विशेषताएं सम्मिलित होती है। उदाहरण के लिए राग की एक ही बन्दिश सीख लेने से राग के समस्त पहलुओं को नहीं समझा जा सकता जबकि राग यमन की भिन्न भिन्न घरानों व अलग– अलग रसों व तालों में निबद्ध बन्दिशें सीखें तो राग यमन के उपरोक्त वर्णित काफी पहलू उजागर हो सकते हैं।

किराना घराना –

इस घराने के संस्थापक उस्ताद अब्दुल करीम खान साहब द्वारा की गई है। जिनकी शिक्षा पिता काले खां,चाचा अब्दुला खां व उस्ताद अब्दुल रहमान खां से प्राप्त हुई। इस घराने ही शिष्य परम्परा में पद्मश्री हीराबाई बड़ौदकर,भरत रत्न पण्डित भीमसेन जोशी,मर्दाना गायिका गेगूबाई हंगल,मश्कूर अलि,राशिद खान जी का नाम आता है। इस घराने में हिंगारंग उपनाम से बन्दिशों की रचना पाई जाती है। अब्दुल करीम खान के अनुसार हिंगारंग उनके दादा का उपनाम था।

इन्दौर घराना –

इंदौर घरानेके संस्थापक उस्ताद अमीर खाान जी थे। इनकी शिक्षा इनके पिता उस्ताद शहमीर खां,उल्ताद शाहमीर खां,उन्ताद अमान अलि खां वहीद खां,व रजब अली खां थे। इन्दौर घराने मे खण्डमेरू पद्धति प्रमुख विशेषता है। अमीर खं का दर्शन आध्यात्मिकता से परिपूर्ण था इललिए इंदौर घराने की गायकी में ध्रुपद अंग सूफियत व आध्यात्मिकता के दर्शन होते हैं। इस घराने की शिष्य परम्परा में पं० अमरनाथ,कंकना बैनर्जी,सिह बन्धु आदि प्रमुख हैं।

कल्याण थाट

रागों के शिक्षण में प्रारम्भ में संगीत विद्यार्थियों को कल्याण थाट की शिक्षा पर विशेष बल दिया जाता है।कल्याण राग कल्याण थाट का आ़श्रय राग है क्योंप्रकारों का उद्गम कल्याण थाट से ही माना गया है इसलिए आश्रय राग कल्याण,कल्याण थाट का जन्य राग है। पंण्डित भातखण्डे जी के थाट राग वर्गीकरण में कल्याण को आश्रय राग कहा गया है औऱ नारायण मोरेश्वर खरे जी के रागांग राग वर्गीकरण मे भी कल्याण अपने परिवार के सभी रागाों का आश्रयदाता राग है। कल्याण को अन्य कई नामों से भी जाता है। यथा एमन,ईमन,यमन,यमन कल्याण। इमन,एमन इस राग के प्राचीन नाम हैं जो कि फारसी भाषा के शब्द हैं। कुछ विद्वानों के मतानुसार इस राग को अमीर खुसरो द्वारा प्रचलितकिया गया। राग यमन की स्वारवली नि रे ग मं ध नि सां है। परन्तु जब कभी इस राग में तीव्र मध्यम् का अल्प प्रयोग हो तो यह यमन कल्याण कहा जाता है। परन्तु यदि कल्याण थाट के लक्षणों का अध्ययन करें तो केवल तीव्र मध्यम का ही वर्णन अधिक पाया गया है। ग्रन्थकारों के अनुसार कल्याण की पहचान ही तीव्र मध्यम से है। अतः राग में तीव्र मध्यम के अल्प प्रयोग और शुद्ध मध्यम के अधिक प्रयोग से यमन और यमन कल्याण में अणिक परिवर्तन प्रतीत नहीं होता। "पुण्डरिक विट्ठल द्वारा 'ईमन कल्याण'संयुक्त राग नाम में तीव्र मध्यम की उपस्थिति के विषय में अमने ग्रन्थ मे बताया है। भातखण्डे जी के अनुसार प्राचीन ग्रन्थों मे वर्णित रागों मे एक आध स्वर बदल कर नवीन राग के उद्धरण अनेक हैं।यमन में शुद्ध मण्यम का प्रयोग विवादी स्वर के प्रयोग का परिणाम है इससे राग मे विशेष हानि नहीं है।''यमन राग की जाति सम्पूर्ण–सम्पूर्ण है,वादी संवादी ग,नी गायन समय तृतीय प्रहर है।

कल्याण थाट का अन्य रागों से अन्तर्सम्बन्ध –

- **मध्यम को उतार कर**
- **पंचम को सा मानकर**

1 कल्याण थाट की स्वरावलियां सा रे ग म' प ध नी हैं। कल्याण के मध्यम को उतारकर विलावल सा रे ग म प ध नी, विलावल के निषाद को उतारकर सा रे ग म प ध नी खामाज, खमाज के गंधार को उतारकर सा रे ग म प ध नीकाफी, काफी के धैवत को उतारकर सा रे ग म प धनी असावरी एवं असावरी के ऋषभ को उतारकर सा रे ग म प धनी भैरवी थाट की प्राप्ति होती है।

2. कल्याण के पंचम को सा मानकर क्रमशःविलावल,खमाज,काफी,असावरी और भैरवी थाटों की प्राप्ति होती है। यदि कल्याण के ऋषभ,धैवत और गंधार स्वरों उतारें तो क्रमशः मारवा पूर्वी और भैरव,तोड़ी थाटों की प्राप्ति होती है।इस प्रकार कल्याण थाट के स्वरों पर प्रयोग कर संगीत विद्यार्थी सभी थाटों को क्रम से समझ जाते हैं इसलिए प्रारम्भिक संगीत विद्यार्थियों को कल्याण राग या यमन राग की शिक्षा सर्वप्रथम दी जाती है। इस राग में भक्ति,श्रृंगार के दोनो रूपों शांत एवं करूण रसों की सृष्टि होती है। किराना घराना और इंदौर घरानों की कई प्रचलित बन्दिशों में इन रसों की सृष्टि देखी जा सकती है।

किराना घराने के कलाकार भारत रत्न पण्डित भीमसेन जोशी जी की राग यमन में बन्दिश–

स्थाई :–ए री आली पिया बिन
सखी कल न परत मोहे घरिपल छिन दिन ।।
अन्तरा–जब से पिया परदेस गवन कीन्हों
रतियां कटत मोरे तारे गिन–गिन ।।

साहित्यिक विशेषताएं–

इस बन्दिश में वियोग श्रृंगार रस का अद्भुद चित्रण हुआ है जिसमें

विरहणी नायिका की रातें पियतम के बिना दुश्मन गई हैं नायिका अपने व्याकुल ह्रदय की बात अपनी सखी को बता रही है कि प्रियतम के वियोग में एक एक रात तारे गिन गिन कर व्यतीत कर रही है। पंण्डित भीमसेन जोशी द्वारा गाई ये बन्दिश अत्यंत प्रचलित है।

सांगीतिक विशेषताएं–

बंदिश मध्य सप्तक के निषाद से नि ध प, ग्रे सा,ग रे मं ग इस तरह से प्रारम्भ होती है जिससे करूण भव सामने आया है। अंतरे में प पसां सां सां सांसांसां नि ध, सां नि ध मं प स्वर समुह मे तार षड्ज पर न्यास कर मध्य सप्तक पर धैवत से मध्यम पर आकर पुनः पंचम पर न्यास बंदिश में रंजकत्व पैदा कर रहा है बंदिश मे स्वरों की गोलाईका आभास हो रहा है।

इंदौर घराना,उस्ताद अमीर खान ,बंदिश–राग यमन

स्थाई– अवगुण न कीजिए गुणी सन
क्या जाने गुण की सार हो गुनि
गुनी जाने गुण की सार।।
अन्तरा– बड़ी बेर समझाऊँ न समझत
बेर–बेर अब कौन कहे
एक बार कह दीनी
कौन कहे अब बार बार।।

साहित्यिक विशेषताए–

राग यमन कल्याण की इस बन्दिश में अमीर खाँ साहब द्वारा एक गहन संदेश दिया गया है कि गुणियों के साथ हमें किसी की निंदा नहीं करनी चाहिए जो व्यक्ति यह करता है उसके स्वयं के गुण कभी विकसित नहीं होती । संगीत साधना के लिए केवल उसकी साधना रूपी गुण की बात ही प्रधान होनी चाहिए।

सांगीतिक विशेषताएं–

इस बंदिश का मुखड़ा नि ध नि रे ग रागवाचक स्वर समूह से शुरू हुआ है।वादी स्वर गंधार पर गुणजिन के गु वर्ण का सम है जिससे स्वर और वर्ण का एकरूप सुंदर बन पड़ा हैइसके अतिरिक्त इसमें गम'ा परे,म'धनिसां,गम'धनि निधप जैसी स्वर संगतियों का बार बार प्रयोग हुआ है।

उपसंहार –

जहां एक ओर किराना घराने की बंदिशों में कोमलता ,स्वर लगाव में चिकनापन रहता है वहीं इंदौर घराने की बंदिशों में ध्रुपदांग की प्रधानता और गाम्भीर्य है।किराना घराने में सुर की चैनदारी पर बल दिया जाता है

जबकि उंदौर में अति विलम्बित लय के ख्याल का सौन्दर्य व्याप्त है जिसमें झूमरा ताल के अति विलम्बित लय के ख्याल इस घराने की निजी विशेषता है किराना घराने की गायकी में भक्ति भाव यत्र तत्र विद्यमान है जिसमे राधा कृष्ण को नायक नायिका के रूप मे प्रस्तुत कर राग यमन में रस की सृष्टि की गई है किराना घ्राना की बंदिशों में कई गहरा विरह भाव कही भक्तिभाव कही ब्रज की अटखेलियां विनय प्रणय भाव है और दूसरी ओर इंदौर के यमन में सन्देशात्मक ,प्रतीकात्मक सूफी तत्व ,वियोग श्रृंगार रस आत्मा परमात्मा के बीच का गहन सम्बन्ध भाषा वैचित्रीय द्रष्टव्य है।

अतः दोनो घरानों की परम्परागत बंदिशों के अध्ययन से राग की विभिन्न विशेषताओं स्वर ,लय, पद,ताल,विशिष्ट स्वर संगतियों का पूर्ण ज्ञान ,शब्द संरचना,साहित्य रूचि,परम्परा व नवीनता का ज्ञान संभव है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची–

1. मिश्र रमेश, दिल्ली धराने का संगीत में योगदान पृ.–15,राधा पब्लिकेशनज़ न्यू दिल्ली
2. अत्रे प्रभा,स्वरंजनी,पृ.1 BR RYTHMS DELHI 110052
3. बृहस्पति सौभाग्यवर्धन,संगीत चिंतन प्रथम खंड,पृ.63,अभिषेक पब्लिकेशनज़ चण्डिगढ़
4. धर्मपाल,किराना घराने की गायकी एवं बंदिशों का मूल्यांकन,पृ,111,115,ओमेगा पब्लिकेशन्ज़ नई दिल्ली
5. सिंह तेजपाल,दैदीप्यमान सूर्य उस्ताद अमीर खान,पृ.166,कनिष्क पब्लिकेशनज़,नई दिल्ली